Content - 1

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय	हिन्दी कवि सम्मेलनों की मंचीय कविता का प्रारंभिक प्रारूप
द्वितीय अध्याय	हिन्दी मंचीय काव्य का वैशिष्टय वाचन एवं गायन की विविध शैलियाँ, वर्ण एवं कथ्य
तृतीय अध्याय	हिन्दी के मंचीय काव्य और प्रदेश के विभिन्न अंचलों में संयोजित कवि सम्मेलनों के स्वरूप एवं प्रस्तुति का समीक्षात्मक अध्ययन
चतुर्थ अध्याय	हिन्दी मंचीय प्रमुख कवियों के विशिष्ट प्रदान एवं आधुनिक हिन्दी मंचीय कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विवेचना
पंचम अध्याय	मंचीय हिन्दी काव्य की भाव संपदा, संवेदना एवं संप्रेषण के स्तर तथा कला संचेतना के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन
षष्ठ अध्याय	मूल्यांकन एवं उपसंहार

प्रस्तावना.....

कविता से मुझे प्यार होना महज एक संजोग नहीं है। आज भी मुझे वह दिन याद आता है जब मैं खुद को रोक नहीं पा रहा था उन स्मृतियों से जो मेरे भीतर घर करके बैठी थीं। मेरे आदरणीय प्रिय गुरुवर डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी जी की वे पंक्तियाँ मुझे याद आती हैं –

''कविता करना आसान नहीं
ये पूछो हम फनकारों से
लोहा हम तो काटते हैं
कागज की तलवारों से
हमें मारना आसान है
कलम छीन लो मर जाएंगे
हम तो शायर हैं, किताबों के
पन्नों में बिखर जाएंगे.....''

डॉ. विराट स्वयं एक मंचीय कवि हैं। उनकी छन्दोबद्ध संगीतमय वाणी ने मुझे काफी प्रभावित किया।

कविता के प्रति मेरा रुझान छात्रकाल से ही रहा है। बी.ए. द्वितीय वर्ष के दौरान वार्षिक परीक्षा के अंतिम दिनों में मेरे मित्र भूपेन्द्र चौधरी ने बातों ही बातों में मुझे कविता लिखने के लिए प्रेरित किया और इसी के चलते मैंने गुजराती और हिन्दी दोनों ही भाषा में कविता लिखने का प्रयत्न किया और इस तरह मैं कविता से जुड़ता ही चला गया और एक तरह से कविता को चाहने लगा। बल्कि कह सकते हैं कि उसे जीने लगा। इसी दौरान मैं डॉ. विष्णु विराट जी के परिचय में आया और उन्हीं से मुझे कविता की

समझ आई और कवि सम्मेलनों से भी परिचय हुआ। श्री विराट जी के सानिध्य में बैठकर मैं इन कवि सम्मेलनों के बारे में चर्चा करता था। कवि सम्मलनों के प्रति एक अपनापन होने लगा और इसी के चलते मैं उर्दू मुशायरे तथा हिन्दी कवि सम्मेलन देखने दूर-दूर तक जाने लगा। बड़ौदा में ओ.एन.जी.सी., गुजरात, रिफाइनरी, पेट्रोफिल्स, रेल्वे आदि के द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों के प्रति मेरा लगाव बढ़ता ही गया। कविवर नीरज, सोमठाकुर, माहेश्वर तिवारी, शिव ओम अंबर, गुरु सक्सेना, प्रदीप चौबे, कैलाश गौतम और गुरुवर श्री विष्णु विराट जैसे ख्यातनाम कवियों को मंच पर काव्य पाठ करते देखा और हिन्दी कविता की रसाग्रही धारा में अवगाहन करते हुए मंत्रमुग्ध होता गया।

अनुस्नातक होने के पश्चात् अब मुश्किल वक्त आ चुका था क्योंकि अब मेरे सामने कई विकल्प थे, जिसमें से मैंने पी-एच.डी. करना ही चुना। सदभाग्य से डॉ. विष्णु विराट जी हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे और मैंने उन्हीं से पी-एच.डी करने की इच्छा व्यक्त की तथा शोध-प्रबंध के विषय की चर्चा की, मेरी रुची को जानते हुए उन्होंने मुझे मंचीय काव्य के विषय में शोध करने के लिए कहा। मैं तुरंत ही तैयार हो गया क्योंकि वैसे भी कवि सम्मेलनों के विषय में तथा मंचीय कवियों को लेकर कुछ ज्यादा कार्य नहीं हुआ था और काव्य मेरा प्रिय विषय भी रहा था। विराटजी ने ही हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. कनुभाई नीनामा के मार्गदर्शन में 'साठोत्तरी हिन्दी के मंचीय गीतकार - एक अनुशीलन' विषय को लेकर पी-एच.डी हेतु पंजीकरण करवाया। हिन्दी कवि सम्मेलनों से संबंधित साहित्य का अध्ययन मनन प्रारंभ किया इसी कालावधि में मुझे ज्ञात हुआ कि हिन्दी कवि सम्मेलनों की पृष्ठभूमिं वस्तुतः ब्रजभाषा से प्रारंभ हुई है। हिन्दी के अधिकांश छायावादी कवियों ने प्रारंभिक ब्रजभाषा में ही काव्य रचनाएँ की थीं। ब्रजभाषा काव्य-संगोष्ठियों को अनेक राजदरबारों ने प्रश्रय दिया। मुख्य रूप से ब्रजमंडल तथा उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल इन काव्य-गोष्ठियों के केन्द्र रहे हैं।

गुजरात में सूरत, अहमदाबाद, भरूच, मेहसाना, बड़ौदा, आणंद आदि स्थलों पर साहित्य सुषमा से सम्पन्न वरिष्ठ कवियों को आमंत्रित करके बहुत ही उच्चकोटि के साहित्यिक कवि-सम्मेलन आयोजित किए जाते रहे हैं। पिछले कुछ वर्ष में इन कवि सम्मेलनों ने विदेशों में भी अपना स्थान बनाया है जो कि हमारे लिए तथा हिन्दी भाषा के लिए गर्व की बात है।

कवि सम्मेलनों के विकास तक का अध्ययन तो मुश्किल था ही लेकिन जब मंचीय कवियों के परिचय और संपर्क की बात आई तब में कुछ बिडम्बना महसूस करने लगा,

लेकिन श्री विराटजी के सहयोग ने इस मुश्किल को भी अत्यधिक सरल कर दिया। अत्यधिक मंचीय कवियों के परिचय, संपर्क, पता तथा टेलीफोन नंबर एकत्रित करने में श्री विराटजी का सहयोग अद्वितीय व न भुला देने वाला रहा। विराटजी सेवा निवृति के बाद भी विद्यार्थियों से तथा विभाग से कभी भी दूर नहीं हैं और उनके ज्ञान बाँटने की शैली से सभी प्रभावित हैं। इस रूप की तुलना मैं अगर सरस्वती के अवतार से करूँ तो यह अतिश्योक्ति कदापि न होगी।

अपूर्वःकोऽपि कोषोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात्।।

अर्थात् जैसे देवी सरस्वती का साहित्य भंडार बाँटने से बढ़ता है और संग्रहीत करने से कम होता है। वैसे ही विराटजी का ज्ञान भी कभी संग्रहीत नहीं रहा, वह निरंतर मुझे प्राप्त होता रहा। जिसके लिए में अपने आपको खुसनसीब समझता हूँ। इतने वर्ष तक मुझे उनसे ज्ञान प्राप्त हुआ और उनका सहयोग मिलता रहा जिसके लिए मैं पूरी श्रद्धा से उनको नमन करता हूँ तथा उनका आभारी हूँ। मैं अपने शोध निर्देशक डॉ. कनुभाई निनामा का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनके मार्गदर्शन से यह भगीरथ कार्य आज सम्पन्न होने आया। डॉ. निनामा जी का मार्गदर्शन व समायंतर प्रोत्साहन से मुझे अपने शोध-कार्य में संबल प्राप्त होता रहा। साथ ही मंचीय कवि श्री सुरेन्द्र दुबेजी (जयपुर) का भी विशेष आभारी हूँ। उनके द्वारा प्रकाशित पत्रिका कवि सम्मेलन समाचार के कारण मुझे विश्व के सबसे बड़े कवि सम्मेलन 'महामूर्ख कवि सम्मेलन' जो प्रतिवर्ष होली के अवसर पर जयपुर में आयोजित होता है उसे देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अपनी रुचि को ध्यान में रखते हुए 'साठोत्तरी हिन्दी के मंचीय गीतकार; एक अनुशूलन' की संक्षिप्त रूपरेखा पर अपना शोध अध्ययन सम्पूर्ण कयिा जिसको मैंने निम्नलिखित छः अध्यायों में पूर्ण किया है-

प्रथम अध्याय हिन्दी कवि सम्मेलनों की मंचीय कविता का है। जिसके अन्तर्गत मैंने हिन्दी कवि सम्मेलनों की मंचीय कविता का प्रारंभिक प्रारूप विकासक्रम, कवि सम्मेलनों की व्यवस्था तथा प्रबन्ध का उल्लेख किया है। इसके अलावा हिन्दी साहित्य के काल विभाजन से हिन्दी काव्य की भाषा और शैली, स्वातन्त्र्योत्तरकालीन मंचीय हिन्दी कविताओं के स्वरूप को भी दर्शाया है। हिन्दी कवि सम्मेलन किस तरह से हिन्दी के प्रचार-प्रसार का केन्द्र बना और हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक कुरीतियों एवं कटु धार्मिक रीति-रिवाजों से बंधित लोगों को अपनी मंचीयता से किस तरह आहत किया वह भी मैंने दर्शाया है। हिन्दी कविता ने ही लोगों में जो सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक

क्रान्ति एवं स्वतन्त्रता संग्राम के लिए एकजुट होने का साहस प्रदान किया है उसकी भी मैंने चर्चा की है।

द्वितीय अध्याय हिन्दी मंचीय काव्य के वैशिष्ट्य का है। जिसके अन्तर्गत मैंने हिन्दी मंचीय काव्य का वैशिष्ट्य, वांचन एवं गायन की विविध शैलियाँ, वर्ण्य एवं कथ्य को किया है। वैशिष्ट्य में मैंने यह पूर्णतः साबित करने का प्रयास किया है कि मानव जीवन का सही प्रतिबिम्ब कवि-सम्मेलन है, क्योंकि सम्मेलन के माध्यम से मंचीय कवि विविध जगहों पर जाकर काव्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति, समाज, राजनितिक, आर्थिक एवं धार्मिक व्यवस्थाओं को लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं। जिससे हमारा जनसमुदाय वर्तमान भारत की स्थिति से अवगत होता है और जागृत भी। ज्यादातर यह मंचीय कवि आम आदमी ही होते हैं, इसीलिए वे आम आदमियों की स्थिति का बखूबी वर्णन कर सकते हैं। कवि-सम्मेलनों की एक महत्वपूर्ण विशेषता और है जो इसकी प्रासंगिकता में चार चाँद लगाती है वह यह है कि इस विधा में विचार स्वयं मनोरंजन के कन्धों पर सवार होकर जन-जन तक पहुँचते हैं। यह भी सुखद आश्चर्य का विषय है कि कवि सम्मेलन सिर्फ भारतीय भाषाओं की ही अनमोल निधि है। हिन्दी में कवि-सम्मेलन व पंजाबी में कवि-दरबार तथा उर्दू में मुशायरा कहा जाता है। भारत की अधिकतर बोलियों में कवि-सम्मेलन होता है।

इनके अलावा गायन एवं वाचन की विविध शैलियाँ जिसके अन्तर्गत लोकरागों के आधार पर सश्वर गायन की रचनाओं का, जनवादी सभा या समारोह में नारेबाजी के रूप में आह्वान गीतों का मंचीय पाठ, ओजपूर्ण वीर रस की कविताओं का वाचन, ओजपूर्ण वीररस की कविताओं का वांचन, चतुष्पदी कविताओं का ओजस्वी वाचन, गजल विधा पर लिखी कविताओं का वाचन, चतुष्पदी तथा परंपरित छंदों का वाचन, नवगीतों की नवविधा में गायन को व हास्य एवं व्यंग्य को भी उदाहरण सहित प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत मैंने हिन्दी के मंचीय काव्य और प्रदेश के विभिन्न अंचलों में संयोजित कवि सम्मेलनों के स्वरूप एवं प्रस्तुति का समीक्षात्मक अध्ययन किया है।

यहाँ मैंने आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक काव्य गोष्ठियों के विभिन्न स्वरूपों को दर्शाया है। संस्कृत साहित्य में हमें सोदाहरण यह दृष्टव्य होता है कि आदिकालीन गोष्ठियों के वार्तालाप द्वारा होती थी। बाद में यह स्वरूप काव्य के रूप में प्रारम्भ हुआ। राजश्रय कवि इसमें अपनी प्रतिभा दिखाते थे। जिनमें समस्यापूर्ति काव्य, पठंत गोष्ठियाँ गायकी समारोह, पावस अथवा फाग गोष्ठियाँ तथा राजा-महाराजाओं के जन्मदिवसों पर

विशेष बधाई काव्य गोष्ठियाँ सम्पन्न होती थीं। महाकवि कालीदास, भास, भवभूति जैसे अनेक कवियों की काव्य संपदा इन दरबारों में ही मुखर हुई है। मध्यकाल में ब्रजभाषा में सर्वाधिक कवियों का विवरण प्राप्त होता है। जिनमें आलम, बोधा देव, मतीराम, पद्माकर, गंग, रसखान, रहीम आदि कवियों का नाम उल्लेखनीय है।

आधुनिक युग में भारत के हर प्रान्त की प्रान्तीय भाषाओं में काव्य गोष्ठियाँ होना शुरू हो गया था लेकिन मेरा विषय हिन्दी गोष्ठियों को लेकर है। इसलिए मैंने हिन्दी को ही लक्ष्य में रखा है और भारत के विभिन्न प्रदेशों में आयोजित कवि सम्मेलनों के स्वरूप की चर्चा भी की है।

चतुर्थ अध्याय अध्याय हिन्दी के मंचीय कवियों पर केन्द्रित है। जहाँ मैंने आधुनिक हिन्दी मंचीय कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विवेचना तथा प्रमुख कवियों के विशिष्ट प्रदान की चर्चा की है। जिसके अन्तर्गत मंचीय कवियों के अनेक रूप देखने मिलते हैं। जिसमें प्रमुख रूप से श्रृंगार रस के मधुर गीतकार, राष्ट्रीय संचेतना के गीतकार, राष्ट्रीय ओजस्विता के कवि, गजल एवम् मुक्तक पढ़ने वाले कवि, व्यंग्य के द्वारा सामाजिक चेतना को व्यक्त करने वाले कवि, हास्य के द्वारा मनोरंजन प्रस्तुत करनेवाले कवि, पेरोडी एवम् विशिष्ट कथ्य के द्वारा मनोरंज करनेवाले कवि, साहित्यिक एवम् मंचीय रचनाओं को प्रस्तुत करने वाले कवि तथा छोटी एवं लम्बी कविताएँ पढ़नेवाले कवि।

इसी अध्याय में मैंने भारत के प्रमुख मंचीय कवियों का परिचय दिया है। जिसके अन्तर्गत गोपालदास नीरज, अशोक चक्रधर, बालकवि बैरागी, भारतभूषण, डॉ. विष्णुविराट, सुनेरन्द्र दुबे, कीर्ति काले, डॉ. रमासिंह, कुमार विश्वास, कृष्ण कुमार नाज, हलीम आईना, सुभाष काबरा, पं. विश्वेश्वर शर्मा, घनश्याम अग्रवाल, मधुप पाण्डेय, डॉ. किशोर काबरा, डॉ. अम्बाशंकर नागर, नवीन प्रकाश सिंह नवीन, अशोक अंजुम, दीपक गुप्ता, प्रदीप चौबे आदि सहित सैंकड़ों कवियों का संपूर्ण परिचय काव्योदाहरण सहित प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय मंचीय हिन्दी काव्य की भाव सम्पदा, संवेदना एवं संप्रेषण के स्तर तथा कला संचना के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन का है।

हिन्दी के मंचीय कवियों का लक्ष्य जनाग्रही रुझान के साथ आम आदमी की संवेदनाओं से जुड़ा हुआ होता है। कुछ कवि सम्मेलन विशिष्ट परिस्थितियों के अनुसार किसी विशिष्ट रस या भाव पर केन्द्रित होते हैं। इनमें से तीन रस विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वीर रस, श्रृंगार रस तथा हास्य एवं व्यंग्य रस। इन रसों का उदाहरण सहित मैंने चर्चा की है। एवं हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों में जिस रस के काव्य की बहुतला देखने को मिली है उसे मैंने उस काल की धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं

राजनैतिक पृष्ठभूमि, परिस्थिति को समझाते हुए सविस्तार चर्चा की है। हिन्दी गोष्ठियों एवं सम्मेलन का स्वरूप हर काल में जिस तरह से परिवर्तित होता गया है, वह कवियों के साथ दर्शाया है। इस अध्याय में मैंने आधुनिक काल को मुख्य रूप से उजागर किया है। आधुनिक काल के विभिन्न वरिष्ठ कवि जैसे श्री नवनीत चतुर्वेदी, श्री नाथुराम शंकर शर्मा, श्रीधर पाठक, सत्यनारायण कविरत्न, पं. श्यामल शुक्ल 'शंठ कवि' आदि अनेक कवियों की चर्चा की है।

हिन्दी के मंचीय कवियों का मूल विषय जन-सामान्य के साधारण अनुभूत तथ्यों से जुड़ा रहता था। कवि अपनी कल्पनाओं को भावों एवं रसों के माध्यम से काव्य में निरूपित करके जन-समुदाय तक पहुँचाता है। कवियों के यही श्रृंगार, वीर, हास्य एवं व्यंग्य रस के काव्यों को तथा अन्य रसों के काव्यों को भी मैंने यहाँ प्रस्तुत किया है। कवि सम्मेलनों में भावा-अभिव्यक्ति के परोक्ष एवं अपरोक्ष पक्ष, मंचीय कवि के अभिधा में ही अपनी बात रखने के ढंग तथा सहज से सूक्ष्म तक जाने के रूप को भी मैंने बखूबी चर्चित करने का प्रयास किया है।

षष्ठ अध्याय : उपसंहार का है जिसके अन्तर्गत मैंने संपूर्ण शोध प्रबन्ध के निचोड़ को प्रस्तुत किया है। और अन्त में शोध-प्रविधि के अनुसार परिशिष्ट दिया है जिसमें संदर्भ-पुस्तकों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई है।

कभी-कभी हम कहते हैं कि हमारे कहे शब्द सच हो जाते हैं। आज जब मैंने यह कार्य पूर्ण किया तो बचपन में जब मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था तब पिताजी से कहा था कि मैं जरूर डॉक्टर बनकर दिखाऊँगा। हाँ, ये अलग बात है कि भाषा का डॉक्टर बना Doctorate of Philosophy की डिग्री प्राप्त करूँगा। शोध कार्य के दौरान मुझे बहुत से नए साथी-सहयोगी मिले मैं तहेदिल से उनका शुक्रिया करना चाहता हूँ। उन दोस्तों में विशेष रूप से पुष्पा यादव, गीता परमार, अपूर्वा जादव का मैं धन्यवाद करना चाहूँगा। वैसे मैंने पढ़ाई के दौरान विद्यार्थियों का नेतृत्व भी किया और दो वर्ष तक विद्यार्थियों का नेता भी चुना गया और कुछ विद्यार्थी अग्रणियों ने मुझे भरपुर सहयोग दिया जिसमें ऋत्विक जोशी, जिज्ञेश राव, अजय पटणी, जावेद सैयद, कृणाल परमार, अशोक दुबे, हितेश सोलंकी, पंकज बारीया, अमित वाघेला, नेहल व्यास, जीतु सरोज, हार्दिक पंचाल हैं। मेरे विभाग के कुछ अन्य साथियों ने भी मेरी मदद की जिसमें अमित विश्वकर्मा, अमीषा शाह, गोतम पाटणवाडीया, निमिषा तथा संस्कृत विभाग के कमलजीत सिंधा का भी मैं धन्यवाद करता हूँ।

अब मैं उनकी बात करने जा रहा हूँ जिनके लिए शब्द भी छोटे पड़ जाये। हम

सबका ऋण तो चुका सकते हैं लेकिन इस संसार में माता–पिता का ऋ कभी नहीं चुका सकते। मैंने यह कठिन शोधकार्य माता हंसाबहन तथा पिता चीमनभाई के आशीर्वाद से सम्पन्न किया है। साथ ही मेरी जीवन संगिनी जानकी जिसने मुझे हर पल अपना प्यार दिया और जीवन के हर पल में मेरे साथ रही, चाहे वे गम का हो या खुशी का, मैं हमेशा अपने हृदय से उनका आभारी रहूँगा। साथ ही बड़े भैया कल्पेश, रीना भाभी और छोटी बहन हेतल, जयेश जीजाजी, भारती बहन, और प्यारे नील और खुशी का भी कृतज्ञ रहूँगा।

इसके अतिरिक्त महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शैलजा भारद्वाज, डॉ. शन्नो पाण्डे जी, डॉ. कल्पना गवली, डॉ. एम.एस. परमार, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. जाडेजा, डॉ. अनीता शुक्ला, डॉ. मनीषा ठक्कर तथा डॉ. दक्षा मिस्त्री का भी आभार प्रकट करता हूँ। विशेष रूप से डॉ. शन्नोजी का मैं बहुत ही आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे हमेशा एक पुत्र की भांति प्रेम न्यौछावर करते हुए मार्गदर्शन दिया।

अंत में मैं नंदकिशोर पटेल, मोना, कीना पटेल और समस्त ससुराल पक्ष जिनके विदेश में होने का मुझे कभी भी आभास नहीं हो पाया। उनका सहयोग, प्रेम व शुभकामनाओं ने ही मुझे मेरा यह भगीरथ कार्य पूर्ण करने में सहायता प्रदान की। साथ ही अन्य सभी उन सहयोगियों व सहपाठियों का जिन्होंने मेरे शोध कार्य में परोक्ष या अपरोक्ष रूप से मेरी मदद की उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

कुछ ऐसे व्यक्ति, जो विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण व उच्च पद पर आसीन हैं, का स्नेह मुझे निरंतर प्राप्त होता रहा, मैं उन्हें कदापि नहीं भूल सकता जिनमें प्रिय डॉ. दिनेश यादव, डॉ. प्रज्ञेश शाह, श्री नरेन्द्र रावत, डॉ. आई. आई. पण्ड्या, डॉ. आशीर महेता, डॉ. संजय करनदीकर, डॉ. अमीत धोड़किया, डॉ. भरत महेता, डॉ. दर्शिनी दादावाला, कला संकाय के डीन प्रो. नितिन व्यास, प्रो. प्रदीप सिंह चूंडावत और पूर्व डीन आर. जे. शाह का भी आभारी हूँ। तथा विशेष रूप से श्री जिगर इनामदार एवं श्री मेहुल लाखानी का भी हृदयपूर्वक आभार प्रकट करता हूँ।

विनीत

रूपेश सी. प्रजापति